

रोह के कसमारा गांव में मंगलवार को कार्यशाला में किसानों के साथ कृषि विशेषज्ञ।

मूल्य संवर्धन के माध्यम से किसानों को समृद्ध बनाएं

- फसल की किस्मों के संरक्षण और फल मूल्य संवर्धन पर कार्यशाला आयोजित
- कीट-व्याधि प्रबंधन की तकनीकों पर दी गई जानकारी

रोह, निज प्रतिनिधि। कृषकों की पारंपरिक एवं स्थानीय फसल-बागवानी किस्मों के संरक्षण, मूल्य संवर्धन और बाजार से बेहतर जुड़ाव के उद्देश्य से रोह के कसमारा गांव में एक दिवसीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआर, केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, बिहार राज्य जैव विविधता परिषद एवं कृषि विज्ञान केंद्र सेखोदेवरा के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य स्थानीय फल किस्मों के संरक्षण और मूल्य संवर्धन के माध्यम से किसानों की आय एवं समृद्धि बढ़ाना था।कार्यक्रम में आईसीएआर, केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान लखनऊ के फसल सुधार एवं जैव-प्रौद्योगिकी विभाग के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने किसानों को आम, अमरूद, नींबू, करोंदा, बेल, आँवला एवं कटहल जैसी पारंपरिक फल किस्मों के संरक्षण और पंजीकरण की प्रक्रिया की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किसानों के पास उपलब्ध विशिष्ट एवं उपयोगी किस्मों का संरक्षण और वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण, कृषक अधिकारों की रक्षा तथा जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उन्होंने विरासत वृक्षों की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम में प्रखंड उद्यान अधिकारी विकास कुमार ने जैव विविधता संरक्षण, स्थानीय किस्मों के महत्व तथा लीची एवं आम के वृक्षों में कीट-व्याधि प्रबंधन की तकनीकों पर जानकारी दी। कृषि विज्ञान केंद्र सेखोदेवरा के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. शशांक शेखर सिंह एवं पशु विज्ञान विशेषज्ञ रजत रंजन भी उपस्थित रहे। विशेषज्ञों ने किसानों को स्थानीय किस्मों की पहचान, संरक्षण एवं पंजीकरण के लिए प्रोत्साहित किया तथा फल उत्पादों के प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और बाजार संपर्क के माध्यम से आय बढाने के अवसरों पर चर्चा की।